



# 中华传统文化 简明词典

首席顾问——许嘉璐  
主 编——李行健



中国书店出版社



中国书

(京)新登字083号

图书在版编目(CIP)数据

中华传统文化简明词典/李行健主编. —北京:中国青年出版社, 2015.5

ISBN 978-7-5153-3226-0

I. ①中... II. ①李... III. ①中华文化—词典 IV. ①K203-61

中国版本图书馆CIP数据核字(2015)第065428号

责任编辑 李 茹 [liruice@163.com](mailto:liruice@163.com)

封面设计 瞿中华

出版发行 中国青年出版社

社 址 北京东四十二条21号

邮政编码 100708

网 址 [www.cyp.com.cn](http://www.cyp.com.cn)

门市部 010-57350370

编辑部 010-57350508

印 刷 北京楠萍印刷有限公司

经 销 新华书店

规 格 880×1230 1/32

印 张 12.5

插 页 4

字 数 700千字

版 次 2015年5月北京第1版

印 次 2015年5月北京第1次印刷

印 数 1-6000册

定 价 55.00元

本图书如有印装质量问题,请凭购书发票与质检部联系调换 联系电话:(010)57350337

# 中华传统文化简明词典

首席顾问 许嘉璐

主 编 李行健

中国青年出版社

# 《中华传统文化简明词典》

## 编写组

首席顾问 许嘉璐

顾 问 柳 斌 朱新均 曹先擢 傅永和 仲哲明

主 编 李行健

副 主 编 季恒全 高喜田 高慎贵

编写人员 董绍克 徐复岭 程国牲 钮 葆 朱振平  
张 标 吴承琳 冉中光 刘景耀 徐赋秋  
陈毓舒 靳古隆 张德吉 仇志群 邵统绪  
廉启一 王 芬 宋芳彦

审稿专家 朱小健 张圣洁 朱瑞平 安 然 冉淮舟  
叶齐炼 娄 毅 祝晓峰 李 茹

工作人员 孔德成 王 宏 邢锁明 崔颖昌

# 序

许嘉璐

任何民族的文化，都起源于该民族远古的生活、生产以及所处的自然环境。在其漫长的发展征途中，必不可少的条件有二：1，犹如树木，随着年年四季轮转，叶落而复生，枝新则益高，但新叶新枝都是从原有的根和干上“长”出来；2，不断接受外来的肥、水和花粉，这样才能不断茁壮。中华文化就是这样在几千年或风和日丽，或风雨雷暴的历史中兴而衰，衰而兴，延绵至今，仍具极大活力的。唯其如此，中华文化才能超越时空，为历代亿万人民所认同，形成国家永不枯竭的合力，也才能被外人所尊重。

中华文化在历史上有过几次极其重要的转型。从上一个世纪之交开始了最近一次、也是最为剧烈的一次转变，几经曲折，到现在为止这一过程还没有结束。眼下人类对和平、友谊、安全、幸福的渴望，世界政治经济状况的复杂多变，中华民族面临的历史性机遇，人们对传统文化的回顾与留恋，都在呼唤着中华文化又一个发展高潮的到来。

在这样的时刻，学者们正在面向当下、面向世界、面向未来，殚精竭虑地进行研究、争辩、修正、创新，各行各业越来越多的人们在设法多了解一些传统文化，观察着文化发展的动向。

任何民族的文化，都是个极其复杂而庞大的系统；而中华文化，确如人们常说的博大精深、源远流长。文化研究，需要多种学科的共同努力；一般的读者如何简便地、一目了然地大体把握住中华传统文化的筋脉？如何在人们听、读古典文献遇到一些问题时可以自行解决呢？出版一部传统文化的简明词典不失为一个挺好的办法。

有感于此，曾经编纂过不少优秀字词典的一批专家，由李行健先生领衔编写了这部《中华传统文化简明词典》。在我看来，这不啻为这

些专家在象征着吉祥的乙未年到来之际，奉献给广大读者的一份文化之礼。

任何文化在历史长河中都沉淀下了许多自己专有的典籍(包括口传的)、概念(包括名词、术语)和重要的人物、事件和掌故，这些就可以作为踏入文化大观园必备的导游图或索引。《中华传统文化简明词典》就是这样的角色：翻看了它，可以知其梗概；要想详细深入，即请按照它所提供的信息“按图索骥”。

中华民族文化自古就是由居于中华大地上的所有民族、部落共同创造、哺育、保护、发展起来的。汉民族文化只是其中的主干而已；即使在我们所称说的“汉文化”当中，也有许多来自于非汉族的内容和形式。因此，“中华传统文化”理应包括汉族以外其他民族文化的内容；我理想中的《中华传统文化词典》一类的工具书，也应该包括汉族以外所有民族文化的内容。但是，编纂这样一部词典谈何容易！可以想见其工程之浩大。李行健先生他们之所以在所编的这部词典名字中嵌一个“简”字，大概也隐含着待机而编一部内容更为全面的词典的意愿吧。若真如是，那么，就让我们翘首以待。

# 凡 例

为适应全国人民学习中华优秀传统文化的需要,特编写本词典。本词典是普及性的小型辞书,以中等及中等以上文化程度的读者为主要服务对象,也可用作传统文化普及教育的参考书。本词典坚持古为今用、批判继承原则,促进优秀传统文化的发扬光大,发挥其思想熏陶和文化教育功能,积极服务于社会主义核心价值观的培育和践行。

一、条目以体现中华优秀传统文化的词语、短句为基本收释对象,并适当收释一些相关的基本概念、基本知识词语、短句及有关人物和著作。条目从儒家学说、道家学说、佛家学说和诸子百家学说中广搜精选,共 3600 余条。

二、全部条目按照汉语拼音字母顺序排列。首字形、音相同的,按第二个字的音序排列。第二个字读音相同的,按第二个字的笔画数由少到多排列。

三、为了便于读者检索,正文前编有内容分类索引表。

四、条目、释文中的罕用字和容易错读的字,括注读音。如:

【论(lún)语】、【公冶长】……贤否(pǐ)得失。

五、一般词语的释义,先解释词语的含义,指明出处,适当援引原文;原文不易理解的用普通话意译,对较难理解的字、词予以括注。

六、释文中的书证,作者是古代人的,在人名前标明朝代(朝代与人名之间使用间隔号)。非个人著作(如《金刚般若菠萝蜜经》《礼记》等),我国著名古典小说(如《红楼梦》《西游记》《水浒传》《三国演义》等),知名度极高的专著(如《论语》《孟子》等),不标注作者姓名,也不标注朝代。

七、引《论语》文凡属孔子的话,“子曰”二字均省,在上下文中用



“孔子说”或“孔子认为”予以照应。其他如“曾子曰”“子夏曰”等则不省,以免引起歧义。如:

【杀身成仁】《论语·卫灵公》:“志士仁人,无求生以害仁,有杀身以成仁。”孔子说志士仁人为实现仁的道德理想,即使牺牲生命也在所不惜。……

【弘毅】……《论语·泰伯》:“曾子曰:‘士不可以不弘毅,任重而道远。’”

八、人物的条目以通用名为主条,较通用的为副条,不通用的不出条。条目本身并非人名,但确属普遍称呼的立条。如【冉有】立为主条,【冉求】和【子有】立为副条。【孔子】立条,“孔丘”“仲尼”不立条。释义内容为生卒年份、字号、籍贯、成就和简要评价等。如:

【孔子】(前 551—前 479)名丘,字仲尼,春秋时鲁国陬(zōu)邑(今山东曲阜东南)人。我国古代伟大的思想家、教育家、政治家,儒家创始人。早年家境贫寒,做过多种卑贱的工作。十五岁立志学习,先后问学于郈(tán)子、师襄、老子等人,并整理《春秋》《诗经》等古籍,以博学多才闻名于世。曾任鲁国司空、大司寇等职。首创面向所有人的“私学”,提出“有教无类”,面授弟子多达三千余人;在教学方法上倡导因材施教、启发式、学思结合、学以致用等。创立儒家学说,言论见于《论语》《易传》《礼记》等书。其学说以“仁”为核心。“仁”即“爱人”,“己所不欲,勿施于人”“己欲达而达人”,进而“泛爱众”,达到“天人合一”,认为这是解决人类一切社会问题的锁钥。在政治上提出“天下为公”的社会理想,提倡德治和教化,对民众既“富之”又“教之”,反对苛政和刑杀。在道德修养上指出“道不远人”,每个人通过努力都能成为君子,进而成为圣人,主张以“忠、孝、礼、义、信”调整各种关系,使社会趋于和谐;当社会群体都是君子、诸侯国皆由圣人执政时,就会实现世界大同。在思维方式上提倡“中庸之道”,克服极端倾向,避免过与不及。其思想已成为我国传统文化的主流,历代尊为“至圣先师”,当今尊为“永远的人类伟人”,名

列“世界十大名人”之首,受到全世界的广泛尊崇。联合国以其生日9月28日为世界教师节。

九、著作的释义先指出书名或篇名,重点简述基本内容、观点、社会意义;若有别称,用“也称”或“也说”指出。如:

【论(lún)语】书名。儒学重要经典之一。主要记载孔子及其弟子的言行。(论:编纂整理)主要由孔子的弟子及其再传弟子陆续编定,约成书于战国初期。全书约15000字,分20篇。集中反映以孔子为代表的儒家思想。主要包括以“仁”为核心的政治主张,以“克己复礼”为特点的礼治原则,以无过无不及为准则的“中庸之道”,以君子、圣人为范式且以忠恕恭宽信敏惠等为内容的高尚人格标准。是一部社会治理、人生规划的教科书。所以古代有“半部论语治天下”的说法。南宋后在大众中得到普及与传播,在世界上也有广泛影响。比较重要的注本:宋代邢昺(bǐng)《论语注疏》、宋代朱熹《论语集注》、清代刘宝楠《论语正义》、今人杨伯峻《论语译注》。

# 分类索引

## (一) 语词、概念

### 1. 思想文化

|        |    |           |    |
|--------|----|-----------|----|
| 【爱民如子】 | 1  | 【车同轨,书同文】 | 22 |
| 【爱民如伤】 | 1  | 【讷纬】      | 23 |
| 【爱民如身】 | 1  | 【成人】      | 24 |
| 【八卦】   | 3  | 【成仁】      | 24 |
| 【八字】   | 4  | 【诚笃】      | 24 |
| 【白马非马】 | 5  | 【诚朴】      | 24 |
| 【百家姓】  | 6  | 【诚身】      | 24 |
| 【百家争鸣】 | 6  | 【诚信】      | 24 |
| 【抱一】   | 8  | 【诚意】      | 24 |
| 【北学】   | 10 | 【持正】      | 25 |
| 【本心】   | 10 | 【持重】      | 25 |
| 【辨证论治】 | 11 | 【赤县神州】    | 26 |
| 【宾礼】   | 11 | 【垂范】      | 28 |
| 【兵家】   | 12 | 【春秋学派】    | 29 |
| 【卜】    | 13 | 【慈】       | 30 |
| 【卜辞】   | 13 | 【慈善】      | 30 |
| 【卜卦】   | 13 | 【村学】      | 31 |
| 【卜课】   | 13 | 【达观】      | 32 |
| 【卜筮】   | 13 | 【大道】      | 33 |
| 【不封不树】 | 14 | 【大德】      | 33 |
| 【不惑】   | 14 | 【大而化之】    | 33 |
| 【才德论】  | 17 | 【大节】      | 33 |
| 【茶文化】  | 20 | 【大儒】      | 34 |
| 【察廉】   | 20 | 【大同】      | 34 |
| 【超以象外】 | 21 | 【大同世界】    | 34 |
| 【朝服】   | 22 | 【大雅】      | 35 |

|        |    |        |    |
|--------|----|--------|----|
| 【大一统】  | 35 | 【梵文】   | 54 |
| 【大治】   | 35 | 【非攻】   | 55 |
| 【淡泊】   | 36 | 【非命】   | 55 |
| 【导引】   | 36 | 【非人】   | 56 |
| 【道】    | 37 | 【非乐】   | 56 |
| 【道不远人】 | 37 | 【风范】   | 57 |
| 【道法自然】 | 37 | 【风骨】   | 57 |
| 【道统】   | 38 | 【风习】   | 57 |
| 【道性】   | 38 | 【风雅】   | 57 |
| 【道学】   | 38 | 【封禅】   | 57 |
| 【道义】   | 39 | 【封建】   | 57 |
| 【德】    | 39 | 【奉养】   | 58 |
| 【德行】   | 39 | 【符节】   | 60 |
| 【德政】   | 39 | 【福泽】   | 60 |
| 【德治】   | 39 | 【福祉】   | 60 |
| 【登第】   | 39 | 【付丙】   | 60 |
| 【登科】   | 39 | 【富民】   | 62 |
| 【地支】   | 40 | 【富强】   | 62 |
| 【殿试】   | 41 | 【盖天说】  | 63 |
| 【丁忧】   | 42 | 【干城】   | 63 |
| 【鼎革】   | 42 | 【干戈】   | 63 |
| 【鼎新】   | 42 | 【干支】   | 64 |
| 【东林党】  | 43 | 【感化】   | 64 |
| 【独尊儒术】 | 44 | 【刚】    | 64 |
| 【笃行】   | 44 | 【纲常】   | 64 |
| 【对策】   | 46 | 【高尚】   | 65 |
| 【恩荣宴】  | 47 | 【高士】   | 65 |
| 【恩师】   | 47 | 【格物】   | 66 |
| 【恩泽】   | 48 | 【格物致知】 | 66 |
| 【耳顺】   | 48 | 【庚】    | 67 |
| 【二帝】   | 48 | 【公道】   | 67 |
| 【二十八宿】 | 48 | 【公德】   | 67 |
| 【二十四孝】 | 49 | 【公堂】   | 68 |
| 【法家】   | 51 | 【公义】   | 68 |
| 【法制】   | 52 | 【公元】   | 68 |
| 【法治】   | 52 | 【公正】   | 68 |
| 【反哺】   | 53 | 【恭】    | 68 |
| 【反切】   | 53 | 【恭敬之心】 | 68 |
| 【反省】   | 53 | 【躬亲】   | 68 |
| 【反真】   | 53 | 【躬行】   | 68 |

|        |    |        |    |
|--------|----|--------|----|
| 【共和】   | 69 | 【翰林院】  | 84 |
| 【共商国是】 | 69 | 【翰墨】   | 84 |
| 【钩沉】   | 69 | 【行辈】   | 84 |
| 【孤家寡人】 | 70 | 【浩气】   | 84 |
| 【古董】   | 70 | 【浩然】   | 84 |
| 【古风】   | 70 | 【合同异】  | 85 |
| 【古训是式】 | 72 | 【和】    | 85 |
| 【古谚】   | 72 | 【和而不同】 | 85 |
| 【古语】   | 72 | 【和合】   | 85 |
| 【古装】   | 72 | 【和美】   | 86 |
| 【骨气】   | 72 | 【和睦】   | 86 |
| 【顾名思义】 | 73 | 【和平】   | 86 |
| 【寡欲】   | 73 | 【和如羹焉】 | 86 |
| 【官爵】   | 74 | 【和为贵】  | 86 |
| 【官学】   | 74 | 【和谐】   | 86 |
| 【冠盖】   | 75 | 【河汾门下】 | 86 |
| 【冠冕】   | 75 | 【恒】    | 87 |
| 【龟鹤】   | 76 | 【恒产】   | 87 |
| 【规谏】   | 76 | 【恒心】   | 87 |
| 【规诫】   | 76 | 【薨】    | 87 |
| 【鬼雄】   | 76 | 【弘毅】   | 88 |
| 【贵无论】  | 76 | 【弘愿】   | 88 |
| 【国本】   | 77 | 【宏达】   | 88 |
| 【国别史】  | 77 | 【洪荒】   | 88 |
| 【国策】   | 77 | 【洪炉】   | 88 |
| 【国粹】   | 78 | 【鸿蒙】   | 89 |
| 【国富民安】 | 78 | 【鸿儒】   | 89 |
| 【国魂】   | 78 | 【鸿雁】   | 89 |
| 【国教】   | 78 | 【黄】    | 89 |
| 【国君】   | 78 | 【后宫】   | 89 |
| 【国难】   | 78 | 【厚爱】   | 90 |
| 【国殇】   | 78 | 【厚道】   | 90 |
| 【国士】   | 78 | 【胡服骑射】 | 90 |
| 【国手】   | 78 | 【华盖】   | 92 |
| 【国学】   | 79 | 【华夏】   | 92 |
| 【国子监】  | 79 | 【华夏文化】 | 92 |
| 【汉承秦制】 | 82 | 【华裔】   | 93 |
| 【汉学】   | 83 | 【皇储】   | 94 |
| 【汗青】   | 83 | 【皇帝】   | 94 |
| 【翰林】   | 83 | 【皇家】   | 94 |

- |          |     |        |     |
|----------|-----|--------|-----|
| 【皇亲国戚】   | 95  | 【甲子】   | 106 |
| 【皇权】     | 95  | 【兼爱】   | 107 |
| 【皇上】     | 95  | 【俭】    | 107 |
| 【皇天后土】   | 95  | 【检点】   | 107 |
| 【黄老】     | 96  | 【检束】   | 107 |
| 【黄老学派】   | 96  | 【简约】   | 107 |
| 【黄老之治】   | 96  | 【见地】   | 107 |
| 【黄宗羲定律】  | 97  | 【建言】   | 108 |
| 【徽商】     | 97  | 【渐悟】   | 108 |
| 【会馆】     | 98  | 【践行】   | 108 |
| 【会试】     | 98  | 【践诺】   | 108 |
| 【惠】      | 98  | 【践约】   | 108 |
| 【浑天说】    | 99  | 【鉴戒】   | 109 |
| 【货殖】     | 100 | 【接济】   | 111 |
| 【几(jī)谏】 | 101 | 【节操】   | 111 |
| 【击节】     | 101 | 【节用】   | 111 |
| 【积累莫返之害】 | 102 | 【结绳记事】 | 111 |
| 【及第】     | 102 | 【金】    | 112 |
| 【及冠】     | 102 | 【金榜】   | 113 |
| 【吉礼】     | 102 | 【金榜题名】 | 113 |
| 【吉日】     | 102 | 【金华朱学】 | 113 |
| 【吉兆】     | 103 | 【金文】   | 114 |
| 【济贫】     | 104 | 【金乌】   | 114 |
| 【济世】     | 104 | 【尽孝】   | 115 |
| 【祭拜】     | 104 | 【尽性】   | 115 |
| 【祭典】     | 104 | 【尽忠】   | 115 |
| 【祭奠】     | 104 | 【进士】   | 115 |
| 【祭酒】     | 104 | 【晋商】   | 116 |
| 【祭礼】     | 104 | 【缙绅】   | 116 |
| 【祭祀】     | 104 | 【经部】   | 116 |
| 【祭坛】     | 104 | 【经典】   | 116 |
| 【稷下学派】   | 105 | 【经史合一】 | 117 |
| 【家风】     | 105 | 【经史子集】 | 117 |
| 【家规】     | 105 | 【经世致用】 | 117 |
| 【家教】     | 105 | 【经书】   | 117 |
| 【家谱】     | 105 | 【经学】   | 117 |
| 【家学】     | 105 | 【经传】   | 118 |
| 【家训】     | 105 | 【精舍】   | 118 |
| 【嘉礼】     | 105 | 【精忠】   | 118 |
| 【甲】      | 106 | 【井田制】  | 118 |

|               |     |        |     |
|---------------|-----|--------|-----|
| 【井蛙】          | 118 | 【郎中】   | 132 |
| 【敬业乐群】        | 120 | 【老庄】   | 133 |
| 【九鼎】          | 120 | 【乐土】   | 134 |
| 【九宫】          | 120 | 【乐园】   | 134 |
| 【九流】          | 120 | 【类书】   | 134 |
| 【九流十家】        | 120 | 【离坚白】  | 135 |
| 【九品中正】        | 121 | 【礼】    | 135 |
| 【九思】          | 121 | 【礼拜】   | 135 |
| 【九行】          | 121 | 【礼法】   | 135 |
| 【九州】          | 121 | 【礼教】   | 136 |
| 【九族】          | 121 | 【礼器】   | 136 |
| 【旧雨】          | 122 | 【礼让】   | 136 |
| 【就义】          | 122 | 【礼仪】   | 136 |
| 【举人】          | 122 | 【礼义廉耻】 | 136 |
| 【巨擘】          | 123 | 【礼乐】   | 136 |
| 【爵禄】          | 123 | 【礼制】   | 136 |
| 【爵位】          | 123 | 【礼治】   | 136 |
| 【军机处】         | 123 | 【理学】   | 140 |
| 【军礼】          | 123 | 【力行】   | 141 |
| 【均田制】         | 123 | 【历法】   | 141 |
| 【君君、臣臣、父父、子子】 | 123 | 【历书】   | 141 |
| 【君权神授说】       | 123 | 【立德】   | 141 |
| 【君主】          | 124 | 【立功】   | 141 |
| 【君子】          | 124 | 【立言】   | 141 |
| 【郡县制】         | 125 | 【立志】   | 141 |
| 【康泰】          | 127 | 【隶书】   | 142 |
| 【科甲】          | 128 | 【连中三元】 | 142 |
| 【科举】          | 128 | 【廉耻】   | 143 |
| 【克己】          | 128 | 【廉洁】   | 143 |
| 【克己复礼】        | 128 | 【廉明】   | 143 |
| 【孔门三戒】        | 129 | 【廉正】   | 143 |
| 【孔孟之道】        | 129 | 【廉政】   | 143 |
| 【孔颜乐处】        | 129 | 【良】    | 143 |
| 【孔颜气象】        | 129 | 【良善】   | 143 |
| 【口头禅】         | 130 | 【良心】   | 143 |
| 【宽和】          | 131 | 【良知】   | 144 |
| 【坤】           | 131 | 【烈士】   | 145 |
| 【昆仲】          | 131 | 【六部】   | 151 |
| 【兰若(ruò)】     | 132 | 【六合】   | 151 |
| 【兰台】          | 132 | 【六和】   | 151 |

|            |     |        |     |
|------------|-----|--------|-----|
| 【六甲】       | 151 | 【品级】   | 178 |
| 【六经】       | 151 | 【平等】   | 178 |
| 【六经皆史】     | 151 | 【稽首】   | 181 |
| 【六亲】       | 152 | 【气】    | 181 |
| 【六书】       | 152 | 【气化】   | 182 |
| 【六言六蔽】     | 152 | 【气节】   | 182 |
| 【六艺】       | 152 | 【炁】    | 182 |
| 【龙】        | 153 | 【谦】    | 183 |
| 【龙凤】       | 153 | 【谦称】   | 183 |
| 【龙宫】       | 153 | 【谦恭】   | 183 |
| 【伦常】       | 156 | 【谦让】   | 183 |
| 【伦理】       | 156 | 【谦虚】   | 183 |
| 【卯】        | 161 | 【虔诚】   | 183 |
| 【每事问】      | 161 | 【乾坤】   | 184 |
| 【门阀】       | 161 | 【亲和】   | 185 |
| 【妙悟】       | 163 | 【亲民】   | 185 |
| 【民本】       | 163 | 【亲善】   | 185 |
| 【民气】       | 164 | 【清廉】   | 187 |
| 【民情】       | 164 | 【清明】   | 187 |
| 【民权】       | 164 | 【清平】   | 187 |
| 【民生】       | 164 | 【清真】   | 187 |
| 【民智】       | 164 | 【琼林宴】  | 188 |
| 【民主】       | 164 | 【求索】   | 188 |
| 【敏】        | 164 | 【曲礼】   | 189 |
| 【名家】       | 165 | 【让】    | 191 |
| 【名教】       | 165 | 【让位】   | 191 |
| 【名实】       | 165 | 【让贤】   | 191 |
| 【明】        | 166 | 【人道】   | 191 |
| 【明经】       | 166 | 【人和】   | 191 |
| 【墨家】       | 167 | 【人伦】   | 192 |
| 【墨守】       | 167 | 【人权】   | 192 |
| 【纳谏】       | 170 | 【人文】   | 192 |
| 【南学】       | 171 | 【人我合一】 | 192 |
| 【内功】       | 171 | 【人性皆善】 | 193 |
| 【内圣外王】     | 172 | 【人治】   | 193 |
| 【农家】       | 174 | 【仁】    | 193 |
| 【农历】       | 174 | 【仁爱】   | 193 |
| 【农战】       | 174 | 【仁道】   | 193 |
| 【女真】       | 175 | 【仁人君子】 | 193 |
| 【被(pī)发左衽】 | 178 | 【仁人志士】 | 193 |



|        |     |         |     |
|--------|-----|---------|-----|
| 【仁义道德】 | 193 | 【慎独】    | 210 |
| 【仁义之师】 | 193 | 【圣】     | 211 |
| 【仁政】   | 194 | 【圣母】    | 211 |
| 【容人】   | 195 | 【圣贤】    | 212 |
| 【儒】    | 195 | 【圣训】    | 212 |
| 【儒家】   | 196 | 【师道尊严】  | 212 |
| 【儒教】   | 196 | 【师法】    | 212 |
| 【儒术】   | 196 | 【十二生肖】  | 213 |
| 【儒学】   | 196 | 【十二消息卦】 | 214 |
| 【入泮】   | 196 | 【十年寒窗】  | 214 |
| 【三从四德】 | 199 | 【十善】    | 214 |
| 【三纲】   | 199 | 【石器时代】  | 215 |
| 【三纲五常】 | 199 | 【实学】    | 215 |
| 【三公】   | 200 | 【史部】    | 215 |
| 【三官】   | 200 | 【始作俑者】  | 216 |
| 【三教九流】 | 200 | 【世界】    | 216 |
| 【三乐】   | 200 | 【世俗】    | 216 |
| 【三礼】   | 201 | 【世外桃源】  | 216 |
| 【三省】   | 201 | 【世袭】    | 216 |
| 【三统】   | 201 | 【谥法】    | 217 |
| 【三统说】  | 201 | 【誓愿】    | 218 |
| 【三畏】   | 202 | 【首善之区】  | 218 |
| 【三友】   | 202 | 【书馆】    | 218 |
| 【歃血】   | 203 | 【书香门第】  | 218 |
| 【善】    | 204 | 【书院】    | 218 |
| 【善待】   | 204 | 【术数】    | 219 |
| 【善恶】   | 204 | 【恕】     | 219 |
| 【善举】   | 204 | 【庶民】    | 219 |
| 【善良】   | 204 | 【私德】    | 223 |
| 【善人】   | 204 | 【私学】    | 223 |
| 【善事】   | 204 | 【思无邪】   | 223 |
| 【善心】   | 204 | 【四端】    | 224 |
| 【善意】   | 205 | 【四句教】   | 224 |
| 【善因】   | 205 | 【四声】    | 225 |
| 【上林苑】  | 206 | 【宋明理学】  | 226 |
| 【尚贤】   | 207 | 【宋学】    | 227 |
| 【身教】   | 208 | 【俗乐】    | 228 |
| 【身心合一】 | 208 | 【他律】    | 231 |
| 【神通】   | 209 | 【太极】    | 231 |
| 【慎】    | 210 | 【太极拳】   | 231 |